परमात्मा : दुर्लभ और सुलभ

परमात्मा तो अति दुर्लभ है। खड्ग की धार पर चलने जैसा है। बड़ा मुश्किल है

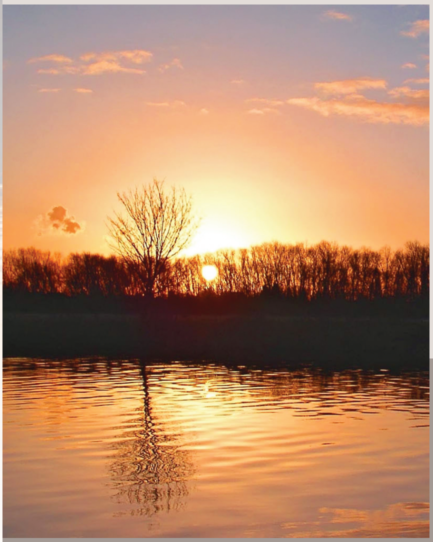

परमात्मा दुर्लभ है, अगर आप उलझे हुए हैं। परमात्मा बहुत सुलभ है, अगर आप सुलझे हुए हैं। सब निर्भर करता है आप पर, परमात्मा पर नहीं। जटिलता है आपकी, तो परमात्मा बहुत दुर्लभ है। और आप पीठ किए खड़े है, सूरज की तरफ, तो सूरज का कोई कसूर नहीं है

हे अर्जुन, जो पुरुष मुझमें अनन्य चित्त हुआ, सदा ही स्मरण करता है मुझे, निंरतर मेरे में युक्त हुए योगी के लिए मैं सुलभ हूं। अंतिम बात, कृष्ण कहते हैं, ऐसे व्यक्ति को मैं अति सुलभ हूं।

यह भी विरोधाभास है। क्योंकि परमात्मा तो अति दुर्लभ है। खड्ग की धार पर चलने जैसा है। बड़ा मुश्किल है। लाखों चलते हैं। एकाध पहुंच पाता है। बड़ा कठिन है। लेकिन कृष्ण कहते हैं, ऐसे चित्तवान व्यक्ति को, जो सतत मेरे स्मरण में डूबा हुआ, भाव जिसका हृदय में आ गया, प्राण जिसका भृकुटी में और इंद्रियां जिसकी संयम को उपलब्ध हुईं और जिसके भीतर अनाहत के नाद की गूंज शुरू हो गई, ऐसे व्यक्ति को मैं अति सुलभ हूं। मुझसे ज्यादा सुलभ और ऐसे व्यक्ति को कोई और चीज नहीं है।

परमात्मा दुर्लभ है, अगर आप उलझे हुए हैं। परमात्मा बहुत सुलभ है, अगर आप सुलझे हुए हैं। सब निर्भर करता है आप पर, परमात्मा पर नहीं। जटिलता है आपकी, तो परमात्मा बहुत दुर्लभ है। और आप पीठ किए खड़े हैं, सूरज की तरफ, तो सूरज का कोई कसूर नहीं है। और आप कितने ही चलते रहें पीठ किए, आप कभी भी सूरज का दर्शन न कर पाएंगे। क्योंकि जो आंखें पीठ किए हैं, वे कितनी ही चलें, कितनी ही चलें, सूरज के दर्शन का कोई सवाल नहीं। और एक कदम वापस लौटें, लौटकर देखें, और एक कदम भी फिर चलने की जरूरत

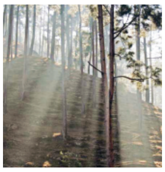

समाधि, ध्यान, कुछ और नहीं, जस्ट ए टर्निंग, लौटना, एन अबाउट टर्न, चित्त का लौट आना स्वयं पर; और आप इसी वक्त उपलब्ध हो जाते हैं। इसी क्षण भी उपलब्ध हो सकते हैं

नहीं; सूरज आंख के सामने है।

परमात्मा ऐसा ही सुलभ और दुर्लभ है। अगर पीठ किए रहें उसकी तरफ, तो अति दुर्लभ है। कितना ही दौड़ें जन्मों-जन्मों, नहीं मिलेगा। और लौटें, ऊर्जा को लौट आने दें भीतर, संयमित हों, ध्यान को उपलब्ध हों, समाधि को पाएं...।

समाधि, ध्यान, कुछ और नहीं, जस्ट ए टर्निंग, लौटना, एन अबाउट टर्न, चित्त का लौट आना स्वयं पर; और आप इसी वक्त उपलब्ध हो जाते हैं। इसी क्षण भी उपलब्ध हो सकते हैं। बहुत सुलभ है। सब आप पर निर्भर है, इट डिपेंड्स आन यू।

लेकिन हम बड़े होशियार हैं। हम मंदिर के सामने जाकर कहते हैं। कि मैं बहुत पापी हूं। मुझ से क्या होगा! तू ही कुछ करवा लेना! और अपने पाप में लौटकर बड़ी कुशलता से लग जाते हैं। अगर हम परमात्मा को परम दयालु भी कहते है, तो इसलिए नहीं कि हम मानते हैं, वह परम दयालु है। सिर्फ इसीलिए कि इसमें हमें सुविधा है।

उमर खय्याम ने मजाक में कहा है—मौलवी ने रोका है उसे कि शराब पीना बंद कर खय्याम—तो खय्याम कहता है कि हम तो पीते ही रहेंगे, क्योंकि हमें उस रहमान की रहमत पर भरोसा है; उस परम कारुणिक पर हमें पूरा भरोसा है। तू आस्तिक है? तू आस्तिक कैसा! नास्तिक है। मौलवी से खय्याम कहता है अपनी शराब की प्याली हाथ में लिए, तू नास्तिक है। हमें तो उसका भरोसा है। उसकी करुणा अपार है। और हम क्या खाक पाप किए! महान करुणा के सामने हम कितने ही पाप करें, सब क्षमा है।

यह उमर खय्याम हम सब पर मजाक कर रहा है। हम सब ऐसे ही हैं। नहीं, वह सुलभ होगा तभी, जब हम उसकी ओर उन्मुख हों। वह दुर्लभ रहेगा तब तक, जब तक हम विमुख हैं। विमुखता ही उसकी दुर्लभता, और हमारी उन्मुखता ही उसकी सुलभता बन जाती है।

—ओशो

गीता दर्शन, भाग—4

प्रवचन नं. 05 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)

ध्यानमय जीवन-शैली

झेन साधना

झेन साधना का एक प्रसिद्ध वचन है कि अगर तुम सिर्फ सामान्य हो जाओ तो तुम असामान्य हो गए। जो व्यक्ति अपने सामान्य होने से संतुष्ट है वही असामान्य है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति असामान्य होने को आतुर है, इसलिए असामान्य होने की इच्छा बहुत सामान्य इच्छा है। प्रत्येक व्यक्ति असामान्य होने की दौड़ में लगा है।

ऐसा आदमी खोजना अत्यंत कठिन है जो किसी-न-किसी तरह से असाधारण होने की दौड़ में नहीं लगा है। इसलिए असाधारण होने की कामना बहुत मामूली चित्त का ढंग है। झेन सद्गुरु कहते हैं कि साधारण होना संसार में सबसे असाधारण बात है। मात्र साधारण होना, सामान्य होना, मामूली होना—बड़ी दुर्लभ बात है। ऐसा कभी-कभी ही घटता है कि कोई व्यक्ति साधारण, सिर्फ साधारण होने से पूरी तरह संतुष्ट हो—पूरी तरह तृप्त हो।

A. K. AUTOMATICS
(Manufacturers of Precision Machine, Turned Components and Fasteners)
HISSAR ROAD, ROHTAK-124001 (HARYANA) INDIA
Tel: 01262-248516, 248885, 248999, 265892-5 Fax: 01262-248223
Email: akmicro@ndf.vsnl.net.in